RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 42 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 30 दिसम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

27 DEC 2018

वर्ष–75, अंक : 42, 27-30 दिसम्बर 2018 तदनुसार 15 पौष, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

एक मन्त्र, एक सभा

लेo–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
–ऋ० १०।१९१।३

शब्दार्थ–तुम्हारा **मन्त्रः** = गुप्त विचार, अथवा **मन्त्र** = पूजा का मन्त्र **समानः** = एक हो, **समितिः** = समिति **समानी** = एक हो। **एषाम्** = ऐसे तुम लोगों का **मनः सह चित्तम्** = मन के साथ चित्त भी **समानम्** = समान हो। मैं **वः** = तुमको **समानम्** = समान=एक **मन्त्रम्** = वेदोपदेश **अभिमन्त्रये** = देता हूँ और **वः** = तुमको **समानेन** = एक–जैसी **हविषा** = भोग–सामग्री **जुहोमि** = देता हूँ।

व्याख्या–विचार, उच्चार और आचार की समानता के कुछ अन्य साधनों का उपदेश करते हैं–

(१) समानोमन्त्रः = पूजा का या गुरुमन्त्र एक–सा होना चाहिए। भिन्न पूजा साधनों से भेद और आग्रह की वृद्धि होती है। भेद और आग्रह कलह को बढ़ाते हैं।

(२) समितिः समानी = विचार करने की, मन्त्रणा की जगह भी एक होनी चाहिए।

(३) समानं मनः सह चित्तमेषाम् = मन के साथ चित्त भी एक हो। केवल मनों की एकता से कार्यसिद्धि नहीं हुआ करती, वरन् जिसके आचार, विचार, मन्त्र, समिति–सभी एक–से हैं, यदि उनके मन के साथ उनके चित्त का=हृदय का सहयोग नहीं, तो सफलता सन्दिग्ध रहती है, क्योंकि हृदय में उल्लास और उत्साह न होने से कार्य का सम्पादन उचित रीति से नहीं हो पाता।

ये सब क्यों समान हों, भगवान् इसका हेतु देते हैं–

समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः...... जुहोमि

तुम सबको मैंने एक मन्त्र से दीक्षा दी है और एक–सी भोग–सामग्री दी है।

सृष्टि के आरम्भ में भगवान् ने जीवों के कल्याण के लिए वेदज्ञान दिया है। वह सबके लिए समान है। तभी तो वेद को 'विश्वजन्या' = विश्वजन की हितकारिणी वाणी कहा है। सूर्य, चन्द्र, भूमि जल, अग्नि, वायु आदि सभी के लिए दिये हैं। जब सबको ज्ञान तथा ज्ञेय एक–से दिये हैं, तो आचार–विचार आदि में भेद क्यों हो!

आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर की अन्तरंग सभा दिनांक 11 नवम्बर 2018 के निश्चयनुसार सभा के तत्वावधान में आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन **3 फरवरी 2019** रविवार को बरनाला में करने का सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय–समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 3 फरवरी 2019 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में बरनाला में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें। इससे पूर्व भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में सफल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर चुकी है इसलिये सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारने का कष्ट करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

अथर्ववेद में इसी जैसा मन्त्र [६।६४।२] है, उसके पूर्वार्ध में **'व्रतम्'** है। 'व्रत' का अर्थ उद्देश्य होता है। मन्त्र और समिति की समानता तभी हो सकती है, जब **'व्रत'**= उद्देश्य=ध्येय=लक्ष्य की एकता हो। देखिए, एक शब्द के भेद ने अर्थ में कितना चमत्कार कर दिया है। उत्तरार्द्ध इस प्रकार है–**'समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभि संविशध्वम्' [६।६४।२]** = तुम सबको समान भोग–सामान देता हूँ, अतः तुम एक चेतः = चित्त में घुस जाओ, अथवा एकचित्तता का अनुभव करो। भगवान् के इस उपदेश का गम्भीर भाव है। प्रतीयमान विषमता के अन्दर भी समता है। इसको समझकर तुम सब एक–सा चिन्तन करो और अन्त में एकचित्तता धारण करो।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

महाभारत में व्रत-चिन्तन

ले.-महात्मा चैतन्यमुनि महादेव सुन्दरनगर (हि.प्र.)

महाभारत में (अनुशासन पर्व) वास्तविक व्रतों के सम्बन्ध में विस्तार से बताया गया है तथा साथ ही इन वैदिक-व्रतों का अनुष्ठान् करने से किस-किस फल की प्राप्ति होती है, इसकी भी चर्चा की गई है। धर्मराज युधिष्ठिर पितामह जी से पूछते हैं-महातेजस्वी! व्रतों का क्या और कैसा फल बताया गया है? नियमों के पालन और स्वाध्याय का क्या फल है? दान देने, वेदों को धारण करने, कण्ठस्थ करने और उन्हें पढ़ाने का क्या फल है? यह सब मैं जानना चाहता हूँ। पितामह! संसार में जो दान नहीं लेता, उसे क्या फल मिलता है? जो वेदों का ज्ञान प्रदान करता है, उसे कौन-से फल की प्राप्ति होती है? अपने कर्त्तव्य पालन में तत्पर रहने वाले शूरवीरों को किस फल की प्राप्ति होती है? पवित्रता और ब्रह्मचर्यपालन का क्या फल बताया गया है? माता-पिता की सेवा से, आचार्य और गुरू की सेवा से तथा प्राणियों पर अनुग्रह और दयाभाव बनाए रखने से किस फल की प्राप्ति होती है? ये सभी बातें मैं यथार्थरूप से जानना चाहता हूँ। इसके लिए मेरे मन में बड़ी उत्कण्ठा है। इसके उत्तर में पितामह कहते हैं-युधिष्ठिर! जो मनुष्य शास्त्रोक्त विधि से किसी व्रत को आरंभ करके पूर्ण रीति से समाप्त करते हैं, उन्हें सनातन लोकों की प्राप्ति होती है। इस लोक में नियमों के पालन का फल तो प्रत्यक्ष ही है। तुमने यह नियमों और यज्ञों का फल ही प्राप्त किया है। वेदों के स्वाध्याय का फल इहलोक और परलोक दोनों में देखा जाता है। स्वाध्यायशील द्विज इहलोक और ब्रह्मलोक-मोक्ष में सदा आनन्द भोगता है। अब तुम मेरे द्वारा विस्तारपूर्वक कथित दस (इन्द्रिय-संयम) का फल सुनो। जितेन्द्रिय पुरूष सर्वत्र सुखी और सन्तुष्ट रहते हैं। इन्द्रिय-संयमी जहां चाहते हैं, वहीं चले जाते हैं और जिस वस्तु की इच्छा करते हैं, वही उन्हें प्राप्त हो जाती है। वे सम्पूर्ण शत्रुओं को नष्ट कर देते हैं, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। दान से दम का स्थान ऊँचा है। दानी मनुष्य ब्राह्मणों को कुछ दान करते समय कभी क्रोध भी कर सकता है परन्तु जितेन्द्रिय कभी क्रोध नहीं करता, अत: दम दान से श्रेष्ठ है। नरेश्वर! शिष्यों को वेद पढ़ाने वाला अध्यापक कष्ट सहन करने के कारण अक्षय फल का भागी होता है। अग्नि में विधिपूर्वक हवन करके ब्राह्मण ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठित होता है। जो वेदों का अध्ययन करके न्यायपरायण शिष्यों को विद्यादान करता है और गुरू के कार्यों की प्रशंसा करने वाला है, वह स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है। वेदाध्ययन, यज्ञ तथा दान देने में तत्पर रहने वाला और युद्ध में दूसरों की रक्षा करने वाला क्षत्रिय भी स्वर्गलोक में पूजित होता है। अपने कर्त्तव्य-पालन में लगा हुआ वैश्य दान देने से उच्चपद को प्राप्त होता है। अपने कर्म में तत्पर रहने वाला शूद्र सेवा के द्वारा स्वर्ग में जाता है।

शूरवीरों के अनेक भेद बताए गए हैं। उन सबके तात्पर्य मुझसे सुनो! उन शूरों के वशंजों तथा शूरों के लिए जो फल बताया गया है, उसे बताता हूँ। कुछ लोक यज्ञशूर होते हैं, कोई इन्द्रियसंयमी होने के कारण दमशूर कहलाते हैं। इसी प्रकार कितने ही मनुष्य सत्यशूर, युद्धशूर तथा दानशूर कहे गए हैं। कोई बुद्धिशूर है तो कोई क्षमाशूर है। कितने ही मनुष्य सरलता दिखाने में शूर हैं, तो बहुत से शम (मनोनिग्रह) में शूरता प्रकट करते हैं। विभिन्न नियमों द्वारा अपना शौर्य प्रकट करने वाले और भी बहुत-से शूरवीर हैं। कितने ही वेदाध्ययन शूर, अध्यापन-शूर, गुरूसेवा-शूर, पितृसेवा-शूर, मातृसेवा-शूर और कितने ही (स्नातक एवं संन्यासी आदि) भिक्षा मांगने में शूर हैं। कुछ लोग वनवास-शूर, कुछ गृहवास में शूर और कुछ लोग अतिथियों की सेवा-सत्कार में शूरवीर होते हैं। ये सब के सब अपने कर्मफलों द्वारा उपार्जित उत्तम लोकों अर्थात् योनियों को प्राप्त होते हैं। यदि तराजू के एक पलड़े पर एक सहस्त्र अश्वमेध यज्ञों का पुण्य और दूसरे पलड़े पर केवल सत्य रखा जाए तो एक सहस्त्र अश्वमेध यज्ञों की अपेक्षा सत्य का ही पलड़ा भारी रहेगा। सत्य के प्रभाव से सूर्य तपता है, सत्य से अग्नि प्रज्वलित होती है, सत्य से ही वायु का सर्वत्र संचार होता है और सब-कुछ सत्य पर ही टिका हुआ है। देवता, पितर और ब्राह्मण सत्य से ही प्रसन्न होते हैं। सत्य को ही परम-धर्म बताया गया है, अत: सत्य का कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिए। ऋषि-मुनि सत्यपरायण, सत्यपराक्रमी और सत्यप्रतिज्ञ होते हैं, अत: सत्य सबसे श्रेष्ठ है। भरत श्रेष्ठ! सत्यवादी स्वर्गलोक में आनन्द भोगते हैं परन्तु दम (इन्द्रिय-संयम) उस सत्य के फल की प्राप्ति में कारण है। यह बात मैनें हृदय से कही है। जिसने अपने मन को वश में करके विनयशील बना दिया है, वह निश्चय ही स्वर्गलोक में सम्मानित होता है। पृथिवीनाथ! अब तुम ब्रह्मचर्य के गुण सुनो। प्रजेश्वर! जो इस संसार में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त ब्रह्मचारी रहता है, उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है, इस बात को जान लो। जो मनुष्य माता-पिता, बड़े भाई, गुरू और आचार्य की सेवा करता है और उनके गुणों में कभी दोषदृष्टि नहीं करता, उसको मिलने वाले फल को जान लो-उसे स्वर्गलोक में सबके द्वारा सम्मानित स्थान प्राप्त होता है। मन को वश में रखने वाला वह मनुष्य गुरूसेवा के प्रभाव से कभी नरक का दर्शन नहीं करता।

इसी प्रसंग में धर्मराज आगे पूछते हैं-पितामह! साधारण लोग जो उपवास को ही तप कहा करते हैं, उसके सम्बन्ध में आपकी क्या धारणा है? मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या वास्तव में उपवास ही तप है या उसका कोई और स्वरूप है? इसके उत्तर में पितामह कहते हैं-

मासार्धमासोपवासाद् यत् तपो मन्यते जनः।
आत्मन्त्रोपघाती यो न तपस्वी न धर्मवित्।।
त्यागस्य चापि सम्पत्तिः शिष्यते तप उत्तमम्।
सदोपवासी च भवेद् ब्रह्मचारी तथैव च।।
मुनिश्च स्यात्सदा विप्रो वेदॉश्चैव सदा जपेत्।
कुटुम्बिको धर्मकामः सदा-स्वप्नश्च मानवः।।
अमांसाशी सदा च स्यात् पवित्रं च सदा पठेत्।
ऋतवादी सदा च स्यान्नि-यतश्च सदा भवेत्।।
विघसाशी सदा च स्यात् सदा चैवातिथिप्रियः।
अमृताशी सदा च स्यात् पवित्री च सदा भवेत्।।

राजन्! जो लोग पन्द्रह दिन अथवा एक मास तक उपवास करके उसे तप मानते हैं, वे व्यर्थ ही अपने शरीर को कष्ट देते हैं। वास्तव में केवल उपवास करने वाले न तपस्वी हैं, न धर्मज्ञ। त्याग का सम्पादन ही सबसे श्रेष्ठ तप है। व्रतचारी मनुष्य को सदा उपवासी (व्रतपरायण-अपने संकल्प पर अडिग रहना) और ब्रह्मचारी होना चाहिए। ब्राह्मण को सदा स्वाध्यायी और मुनि होना चाहिए। धर्मपालन की इच्छा से ही उसे स्त्री आदि कुटुम्ब का संग्रह करना चाहिए (विषय-भोग के लिए नहीं) और सदा जागरूक रहना चाहिए। व्रतचारी मनुष्य को उचित है कि वह मांस कभी न खाए, पवित्रभाव से सदा वेद का स्वाध्याय करे, सदा सत्यभाषण करे और इन्द्रियों को संयम में रखे। उसे सदा विघसाशी, अमृताशी, अतिथिप्रिय और सदा पवित्र रहना चाहिए। आगे धर्मराज पूछते हैं-महाराज! ब्राह्मण कैसे सदा उपवासी और ब्रह्मचारी कैसे विघसाशी और अतिथिप्रिय हो सकता है? इसके उत्तम में पितामह जी कहते हैं:युधिष्ठिर! जो मनुष्य केवल प्रातः काल और सांयकाल ही भोजन करता है, बीच में कुछ नहीं खाता, उसे उपवासी समझना चाहिए। जो केवल ऋतुकाल में अपनी धर्मपत्नी के साथ सहवास करता है, वह ब्रह्मचारी ही माना जाता है। सदा दान देने वाला मनुष्य सत्यवादी ही समझने योग्य है। जो मांस नहीं खाता, वह अमांसाशी होता है और जो सदा दान देने वाला है, वह पवित्र माना जाता है। जो दिन में नहीं सोता, वह सदा जागने वाला माना जाता है। जो सदा नौकर-चाकरों और अतिथियों के भोजन कर लेने के पश्चात् ही स्वयं भोजन करता है, उसे ही अमृतभोजन करने वाला समझना चाहिए। जब-तक ब्राह्मण भोजन न कर लें, तब-तक जो अन्न ग्रहण नहीं करता, वह मनुष्य अपने उस व्रत के द्वारा स्वर्गलोक पर विजय प्राप्त कर लेता है। जो विद्वानों, पितरों और आश्रितों को भोजन कराने के पश्चात् बचे हुए अन्न का ही स्वयं भोजन करता है, उसे विघसाशी कहते हैं। जो विद्वानों, अतिथियों सहित पितरों-माता, पिता, वृद्धजनों के लिए अन्न का भाग देकर स्वयं भोजन करते हैं, वे इस संसार में पुत्र-पौत्रों के साथ रहकर आनन्द भोगने हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

मन ही मनुष्य के बन्धन और मुक्ति का कारण

हमारा मन एक अद्‌भुत तथा विलक्षण शक्ति का केन्द्र है। मन की शक्ति के बिना शारीरिक शक्ति किसी ठोस तथा भारी कार्य का अवसर उपस्थित होकर हतोत्साह होकर बैठ जाती है। मन की शक्ति के द्वारा मनुष्य उत्साह से पूर्ण होकर कार्य करता है और सफलता को प्राप्त करता है। अत: गीता में कहा गया है-

मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो:।

मानव के बन्धन या मुक्ति की भावना सर्वथा मन पर ही आश्रित होती है। इधर वेद भी पुकार-पुकार कर कह रहा है-**तन्मे मन: शिवंसकल्पमस्तु।** हे भगवन्, मेरे मन के संकल्प सदा ही मंगलमय तथा शुभ रूप हों। संस्कृत साहित्य के हर्षचरित में महाराज हर्षवर्धन कहते हैं विजेता वही हो सकता है जो समुद्र को नदी , नदी को नहर तथा हिमालय को एक छोटी सी पर्वत श्रेणी की तरह सुगम तथा लंघनीय समझे। कबीर जी कहते हैं-

मन के हारे हार है मन के जीते जीत अर्थात् मनुष्य की हार और जीत मन के कारण तय होती है। मन के द्वारा मनुष्य सफलता की बुलन्दियों को छू सकता है तो उसी प्रकार मन की दुर्बलता के कारण पतन की ओर अग्रसर होता है। मनुष्य अपने दृढ़ संकल्पों के द्वारा मृत्यु पर भी विजय पा सकता है।

आयुर्वेद के महान् ज्ञाता चरक दो प्रकार की व्याधि मानते हैं, शारीरिक तथा मानसिक-

द्विविधो जायते व्याधिः शारीरो मानसस्तथा।।

मिथ्या आहार विहार से जिस प्रकार शारीरिक रोग उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार विविध मानसिक कारणों से मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं। दुर्बल मन के रोगी छोटी सी शल्य क्रिया में ही अधीर हो बैठते हैं। प्राकृतिक दुर्बलता के अतिरिक्त आजकल की तीव्रगति सापेक्ष यात्राओं में विविध प्रकार की दुर्घटनाओं से तथा अन्य नशीले मादक पदार्थों के सेवन से भी विविध प्रकार की मानसिक दुर्बलताएं उत्पन्न हो जाती हैं, जिससे बलवान् वात-तन्तु भी धीरे-धीरे दुर्बल हो जाते हैं। ये असावधानियां तथा व्यंसन मन को दुर्बल करके तरह-तरह के मानसिक रोग उत्पन्न कर देते हैं। वियोग, शोक, चिन्ता, क्षोभ, कलह, वैमनस्य, अतिपरिश्रम, दीर्घकालीन महारोग, असफलता, धन-हानि, आदि से भी मन रूग्ण हो जाता है।

प्रकृति के विचार से मन मुख्य रूपेण तीन प्रकार का माना गया है, सत्व-प्रधान, रज:प्रधान, तम:-प्रधान। यह सर्वथा सत्य है कि प्रत्येक मन युग-युगान्तरों से संस्कार लेकर संसार में आता है। सत्वगुण प्रधान मन जितात्मा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान, ईर्ष्या से शून्य, स्वाध्यायशील, कर्त्तव्यपरायण, उच्चविचार, उच्च लक्ष्य, तथा उच्च संकल्पों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। रज:प्रधान मन उच्च लक्ष्य का इच्छुक परन्तु स्वार्थ पर, कामादि की प्रेरणा से कभी-कभी विचलित होने वाला, स्वार्थ-वृत्ति तथा ऐश्वर्यभोगी होता है। परन्तु तामस मन अत्यन्त स्वार्थ साधक, नीच वृत्ति, नीच कर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य भावना से सर्वथा शून्य तथा प्रत्येक कार्य में सर्वथा स्वार्थी होता है।

मन के थोड़े अंश में विकृत हो जाने पर मानव सर्वथा पथ भ्रष्ट हो जाता है। कर्त्तव्य तथा अकर्त्तव्य में भेद नहीं समझ सकता। अधिक विकृत हो जाने पर रोगी का जीवन ही भारभूत बन जाता है। वह स्वयं कभी-कभी इतना उद्विग्न हो जाता है कि वह संसार में बन्धु-बान्धवों से, इष्ट मित्रों से तथा उनके सम्पर्क में आने वाले सभी सज्जनों से निज सम्बन्ध तोड़कर सर्वथा एकाकी होकर संसार से मानो रूठ कर बैठ जाता है। कभी कभी वह एकान्तप्रिय बन जाता है और कभी- कभी अपने जीवन को अन्धकारमय समझ कर आत्महत्या का विचार भी करने लगता है। देखिए मन की दुर्बलता मनुष्य को कहां से कहां ले जाती है।

मनुष्य के पास सभी प्रकार के सुख के साधनों के होने पर भी मन की विकृति के कारण सदा ही अप्रसन्न, असन्तुष्ट, तथा अशान्त होकर भटकता रहता है। मन की विकृति मानव की चेष्टाओं में भी विचित्र परिवर्तन कर देती है। कुछ विचारक सत्त्व अर्थात् धैर्य को मन का गुण मानकर मन को मुख्यत: तीन प्रकारों में विभक्त करते हैं, प्रवरसत्त्व, मध्यम सत्त्व तथा हीन सत्त्व। प्रवरसत्त्व वे हैं जो संपत्ति तथा विपत्ति को एक समान समझते हैं। न वे संपत्ति में परम उद्धत तथा अतिगर्वित हो उठते हैं और न विपत्ति में दीन-हीन होते हैं। हीन सत्त्व संपत्ति में तो आकाश पाताल एक कर देते हैं और अभिमान में आकर दूसरों का निरादर कर देते हैं परन्तु जरा सी विपत्ति आने पर दुखी हो उठते हैं और आत्महत्या करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

भारतीय चिकित्सक शिरोमणि चरक जिनके विषय में बहुत से पाश्चात्य वैज्ञानिक कहते हैं कि इन जैसा प्रयोगवादी चिकित्सक संसार भर में नहीं हुआ है, वे लिखते हैं कि काम, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, मान शोक, चिन्ता, उद्वेग, भय, हर्ष ये मनोविकार हैं, जो व्यक्ति इनको जीत ले, वह मृत्यु को भी जीत सकता है। मन की दुर्बलता के कारण व्यक्ति इन विकारों से ग्रसित होता है। अभ्यास के द्वारा ही मनुष्य इन विकारों पर नियन्त्रण कर सकता है। गीता में भी श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि-

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।

अर्थात् लगातार अभ्यास करने से तथा वैराग्य की भावनाओं द्वारा इस मन को संसारिक बन्धनों से मुक्त करके अपने वश में किया जा सकता है। अभ्यास तथा वैराग्य की अतुल शक्ति का अनुमान लगाना अत्यन्त कठिन है। संक्षेप में मन की दुर्बलता से बचने के लिए मनरूपी घोड़ों को अदम्य आत्मशक्ति द्वारा पूरे नियन्त्रण में रखो। इस मनरूपी घोड़े का दमन बड़ी भारी आध्यात्मिक विजय है। मन को नियन्त्रण में रखने से मनुष्य अपनी इन्द्रियों को अपने वश में रख सकता है। मन की दुर्बलता के कारण ही इन्द्रियां विषयों की ओर उन्मुख होती हैं। शिवसंकल्प सूक्त के छ: मन्त्रों में मन के इसी स्वरूप का वर्णन किया गया है कि जो मन जागते हुए दूर-दूर तक जाता है वहीं मन सोते हुए भी कल्पना के सागर में खो जाता है। प्रकाश से भी अधिक इस गतिशील इस मन को मनुष्य अपने विवेक से तथा दृढ़ संकल्पों से वश में कर सकता है। जिस मन के द्वारा सत्कर्मनिष्ठ ध्यान करने वाले बुद्धिमान लोग इष्टकर्मों को करते हैं, जो बुद्धि का उत्पादक और स्मृति का साधन, धैर्यस्वरूप है और मनुष्यों के भीतर नाशरहित प्रकाशस्वरूप है, जिसके बिना कोई भी कर्म नहीं किया जाता, इस प्रकार के मन को मनुष्य वैसे वश में कर सकता है जैसे अच्छा सारथि घोड़ों को लगाम के द्वारा इधर-उधर ले जाता है। मनुष्य को अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए मन की साधना करना अत्यन्त आवश्यक है। जो मनुष्य अपने मन को जीत लेता है, मन के उपर अपना अधिकार कर लेता है वह संसार में कठिन से कठिन परिस्थितियों का भी समाधान निकाल लेता है और जिस मनुष्य का अपने मन के उपर अधिकार नहीं होता वह विपत्तियों के आने पर घबरा जाता है और मन की दुर्बलता के कारण आत्महत्या करने के लिए तैयार हो जाता है। इसलिए हमें इन शिवसंकल्प सूक्त के मन्त्रों का सोते समय पाठ करना चाहिए जिससे इस मन में कभी भी सोते हुए, जागते हुए कुविचार न आएं और हम शुभ संकल्पों को धारण करते हुए निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर रहें।

प्रेम भारद्वाज
सम्पादक एवं सभा महामन्त्री

वेदों में विश्व बन्धुत्व की भावना की विवेचना

ले.-पं. खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

इस लेख के सम्बन्ध में कुछ लिखूँ, उससे पहले यह बतलाना आवश्यक है कि ईश्वर ने पूरी सृष्टि रचने के बाद यानि पशु-पक्षी, कीट-पतंग, पहाड़, समुद्र, नदी-नाले सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, आकाश आदि सब रचने के पश्चात् मानव की उत्पत्ति तिब्बत के पठार पर पृथ्वी के अन्दर कृत्रिम गर्भाशय बना कर अनेक युवा स्त्री-पुरूषों की उत्पत्ति की साथ ही चार ऋषि जिनकी आत्मा अति श्रेष्ठ व पवित्र थी, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा था, उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं उनका प्रकाश करके उनके मुख से उच्चारित करवाये जिनको उपस्थित सभी युवा स्त्री पुरूषों ने उस वेद-ज्ञान को सुना। उन पुरूषों में ऋषि ब्रह्मा भी थे जिनकी बुद्धि अति तीव्र थी, उसने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाया। इसके बाद यह वेद, ज्ञान, पिता अपने पुत्रों को, गुरू अपने शिष्यों को सुनाते रहे और इस प्रकार यह वेद-ज्ञान लाखों, करोड़ों वर्षों तक चलता रहा, इसीलिए इस वेद-ज्ञान को श्रुति भी कहते हैं यानि सुनकर दूसरों को सुनाना। तत्पश्चात् लाखों करोड़ों वर्षों बाद जब कागज, स्याही, कलम आदि अविष्कार हो गया तब इनको चार पुस्तकों में लिपिबद्ध कर दिया जिनको वेद कहते हैं।

वेद का तात्पर्य ज्ञान है। यह ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आदि में एक विधान के रूप में मनुष्य मात्र को दिया। जिस प्रकार सरकारी विधान से राष्ट्र चलता है, उसी प्रकार यह ज्ञान मनुष्यों के लिए विधान है इनमें ईश्वर ने क्या काम मनुष्य को करना चाहिए, क्या काम नहीं करने चाहिए लिखा है। किन कार्यों के करने से मनुष्य अपने जीवन में उत्तरोतर उन्नति व समृद्धि को प्राप्त करता है और अपने जीवन को सुखी व सम्पन्न बनाते हुए अन्यों का जीवन भी सुखी का सम्पन्न बनाता है। जो व्यक्ति वेदानुसार अपने जीवन को चलाता है वह मनुष्यों के चार पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम को भक्ति प्रकार करते हुए मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त करता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। मोक्ष प्राप्ति के लिए ही ईश्वर जीव को इस धरती पर भेजता है।

वेदों में ईश्वर ने मनुष्य के जीवन में काम आने वाले सभी विषय के सम्बन्ध में लिखा हुआ है जिनमें विश्व बन्धुत्व की भावना पर विशेष जोर दिया गया है जिससे विश्व में सुख व शान्ति बनी रहे। वेदों में अनेक विधबन्धुत्व के मन्त्रों में कुछ मन्त्र यहाँ प्रस्तुत करते हैं, जो इसी भाँति हैं।

मन्त्र: अज्येष्ठा सो अकनिष्ठा स एते सं भ्रातरो व वृधुः सौभगाय। (ऋग्वेद)

अर्थ: हम सब भाई-भाई हैं। न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है। सौभाग्य के लिए हम सब परस्पर मिल कर उन्नति करें।

मन्त्र: माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः (अथर्व वेद)

अर्थ: भूमि हमारी माता है और हम सब उसकी सन्तान हैं।

मन्त्र: वसुधैव कुटुम्बकम्।

अर्थ: पूरा विश्व एक परिवार है।

मन्त्र: सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विचिकिन्सासति

अर्थ-हे मनुष्य! तू सब प्राणियों में अपनी आत्मा को देख और सब की आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझ।

मन्त्र: अनुव्रतः पितुः पुत्रः (अथर्ववेद)

अर्थ: पुत्र, पिता के व्रत (आदर्श) का अनुसरण करने वाला होवे।

मन्त्र: कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

अर्थ: पूरे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ।

मन्त्र: जीवास्थ जीव्यासम। (अथर्ववेद)

अर्थ: स्वयं जीवो और दूसरों को जीने दो।

मन्त्र: सत्येनो त्रमिता भूमिः (यजुर्वेद)

अर्थ: यह भूमि सत्य पर टिकी है।

मन्त्र: आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डित।

अर्थ: जो सब प्राणियों की आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझता है। वही पण्डित (विद्वान्) है।

मन्त्र: तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः, मा गृधः कस्य स्विद्धनम् (यजुर्वेद)

अर्थ: इस संसार का त्याग भाव से भोग करो, इसमें लिप्त न हो, लालच न करो, यह संसार किसी का नहीं, ईश्वर का है।

(नोट: इस मन्त्र का मेरे जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा है)

मन्त्र: अहमनृतात सत्य मुपैमि (यजुर्वेद)

अर्थ: मैं असत्य से सत्य की ओर चलूँ।

मन्त्र: अत्र विश्व भवत्येक नीडम्। (यजुर्वेद)

अर्थ: जिससे सारा विश्व एक आश्रय वाला होता है।

मन्त्र: मित्रस्य माचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् (यजुर्वेद)

अर्थ: सब प्राणियों को हम मित्र की दृष्टि से देखें।

वचन: आत्मनः प्रति कूलानि परेषां न समाचरेत् (वेदों के विद्वान् भीष्म पितामह का वचन भी वेदों के समान है।)

अर्थ: जो काम आपको अच्छा नहीं लगता, वह काम दूसरों के लिए भी नकरो।

मन्त्र: यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म:।

अर्थ: यज्ञ करना सब से श्रेष्ठ काम है।

मन्त्र: स्वर्ग कामो यजेत (महर्षि याज्ञवल्कय, शतपथ ब्राह्मण में लिखा है)

अर्थ: जिसकी स्वर्ग जाने की कामना है, वह यज्ञ करे।

मन्त्र: सत्यमेव जयते, नानृतम्।

अर्थ: सत्य की सदैव जीत होती है, झूठ की नहीं।

कुछ वेद-मन्त्र व वेद मन्त्रों के समान ही मन्त्र, अर्थ सहित लिखे है, कृपा सुधि पाठकगण विचार व मनन करें।

आर्य समाज पटियाला में मनाया गया स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त, महान क्रान्तिकारी, गुरुकुल शिक्षा के पुनरूद्धारक, सर्वस्व बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद जी का 92वां बलिदान दिवस आर्य समाज मंदिर पटियाला द्वारा बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। इस अवसर पर 60 जरूरतमंद स्कूल बच्चों को जर्सी व जूते प्रदान किये गये। कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ। आर्य समाज के सभी सदस्यों व विभिन्न स्कूलों से आए हुये बच्चों तथा अध्यापकों ने पवित्र यज्ञाग्नि में आहुतियां प्रदान कीं।

इस अवसर पर चण्डीगढ़ से साध्वी विशोकायति जी विशेष रूप से पहुंची। उन्होंने अपने भजनों एवं उपदेशों से स्वामी जी को निर्भीक क्रान्तिकारी सन्यासी बताया। प्राचार्य एस.आर. प्रभाकर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी का जीवन पूरी मानवता के लिये प्रेरणादायक है। उन्होंने वैदिक संस्कृति के लिये प्रचार प्रसार के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया और अंत में उसी के लिये बलिदान हो गये। इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक विजेन्द्र शास्त्री, प्रिं. निखिल मंडल शास्त्री, पुरोहित गजेन्द्र शास्त्री ने भी समारोह को सम्बोधित किया। वेद प्रकाश तुली, रमेश गंडोत्रा ने भजनों के माध्यम से तथा मास्टर सी.आर. मित्तल ने कविता के माध्यम से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। समारोह के अध्यक्ष प्रधान राज कुमार सिंगला ने आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज पटियाला द्वारा समाज सेवा एवं वैदिक विचारधारा के प्रचार प्रसार का कार्य निरन्तर किया जा रहा है। इस अवसर पर कर्नल आनन्द मोहन सेठी, वीरेन्द्र सिंगला, जितेन्द्र शर्मा, गुलाब सिंह, हर्ष वर्धन, प्रिंसीपल संतोष गोयल, प्रेम लता सिंगला, संगीता सिंगला भी उपस्थित थे।

आर्य समाज श्रद्धानंद बाजार अमृतसर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया

आर्य समाज मंदिर, बाजार श्रद्धानंद अमृतसर में स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान दिवस प्रधान शशि कोमल की अध्यक्षता में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ समाज सेवक अशोक कपूर द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इस मौके पर स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान अजेय प्रेरणा का प्रतीक है। आर्य धर्म की परम्पराएं त्याग और बलिदान पर आधारित रही हैं। महर्षि दयानन्द और धर्मवीर लेखराम के बलिदान और उसके बाद भी लक्ष्य के लिए प्राणों की आहुति देने की कड़ी परम्परा टूटी नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द ने उनके ही आदर्शों को पूरा करते हुए उस बलिदान की परम्परा को आगे बढ़ाया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने धर्म के लिए, महर्षि दयानन्द के कार्यों को पूरा करने के लिये अपने आपको सर्वात्मना समर्पित किया हुआ था। मुंशीराम से यात्रा प्रारम्भ करके महात्मा मुंशीराम बने और महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बनें। स्वामी श्रद्धानन्द जी की एक विशेषता यह थी कि उन्होंने कभी भी विपरीत परिस्थितियों से मुँह नहीं मोड़ा। चुनौतियों का, कठिनाईयों का, मुसीबतों का सामना किया और अपने उद्देश्य प्राप्ति के लिए निरन्तर बढ़ते रहे। कोई भी बाधा, कोई भी चुनौती उन्हें धर्म के मार्ग से विचलित नहीं कर सकी। यही कारण था कि वे इतने महान् कार्यों को करने में सफल हुए। इससे पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री अरुण कुमार विद्यालंकार ने आए श्रद्धालुओं को भजनों के माध्यम से मंत्रमुग्ध किया। इस दौरान प्रधान शशि कोमल ने मेहमानों और अधिकारियों के साथ मिल कर 2019 के कैलेंडर को भी जारी किया। मंच संचालन की भूमिका वैदिक प्रवक्ता पंडित पवन त्रिपाठी द्वारा बखूबी निभाई गई। इस मौके पर आर्य समाज के संरक्षक ओम प्रकाश भाटिया, महामंत्री पुरुषोत्तम चंद शर्मा, मंत्री संजय गोस्वामी, उप प्रधान पवन टंडन, रमन वाही, रवि दत्त आर्य, बलराज जूली, राकेश मेहरा, इन्द्रपाल आर्य, प्रो. अरुण महाजन, स्वराज ग्रोवर, विद्या सागर आदि शहर के गणमान्य आर्य जन उपस्थित थे। **-पुरुषोत्तम शर्मा महामंत्री**

वर्ष 2019 के नए कैलेण्डर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2019 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य पांच रुपये प्रति तथा 500 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

४. छोटी हल्दी पानी में धोकर ५ ग्राम पीस कर गाय के गर्म दूध में डालकर पियें सुबह शाम।

नकसीर-१. बाँसा (अडूसा) के पत्तों का रस १० ग्राम प्रातः पियें। पानी मिलाकर।

२. फिटकारी चूर्ण सूँघें।

धातु विकार-फूल गुलाब के ताजा लेकर ५-५ प्रातः सायं ३-३ ग्राम मिश्री के साथ खाकर ऊपर से गौ दुग्ध पियें।

धातु स्त्राव-१. सिरस के बीजों की मिगी १० ग्राम इमली के बीज छिलका रहित १० ग्राम दोनों को बारीक पीसकर वट वृक्ष के दूध में १-२ दिन खरल करें। फिर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। १ १ गोली प्रातः सायं दूध या पानी से दें। पुराने से पुराना धातु स्त्राव बन्द हो जाता है।

२-राल बारीक पिसी हुई १ ग्राम रात्रि के सोते समय दूध के साथ लें। अति लाभ प्रद है।

धुन्ध (जाला)-सफेद चिरमिटी पान रस आँजो आखन माँहि।

धुन्ध कटे, जाली मिटे, देख लो अजमाया।।

नकसीर-१. बकरी का धारोष्ण दूध मिश्री मिलाकर पियें।

२. पीपल वृक्ष की अन्तः छाल २० ग्राम को १०० ग्राम पानी में रात्रि को भिगो दें। प्रातः छानकर मिश्री मिलाकर पियें।

नामर्दी-सोंठ, काली मूसली, गोरख मुठी समभाग कूट पीस कर कपड़े में छानकर चूर्ण शीशी मैं रख लें। समभाग मिश्री मिला लें। ठन्डे पानी के साथ सुबह सांय ५ ग्राम फाकें। १ सप्ताह प्रयोग करें।

बवासीर-४. गोभी जड़ी के पत्तों की लुगदी बाँधकर लंगोट बाधें।

५. कड़वी तोरई हल्दी का लेप करें।

६. काशीफल की जड़ का चूर्ण ६ ग्राम १० ग्राम शहद से चाटें।

पथ्य-छाछ, चावल, खटाई का प्रयोग नहीं करें।

७. आक के पत्ते घोंटकर पीसें और मस्सों पर लगायें। मस्से गिर जायेंगे।

८. चीनिया कपूर १० ग्राम सरसों के गर्म तेल में ५० ग्राम में डालकर शीशी में रख लें। फुरैरी से मस्सों पर लगायें। १५ दिन मस्से गिर जायेंगे।

भगन्दर-जवान पुरुष की सिर की हड्डी की भस्म भगन्दर पर लगायें।

भांग का नशा-मीठा ताजा दही खिलाएें।

भूख की कमी-५ ग्राम अदरक बारीक काटकर टुकड़े कर नमक मिला भोजन से पहले या साथ में खायें।

नकसीर-१. पीपल वृक्ष की छाल २० ग्राम को १०० ग्राम पानी में भिगो दें रात को प्रातः मिश्री मिलाकर पियें।

२. फिटकरी का चूर्ण सूघें।

नपुंसकता-तुलसी के बीज तथा गुड़ सम भाग पीसकर गोली बना लें। प्रातः सायं धारोष्ण दुग्ध से सेवन करें।

नशा नाशक-आंवले के पत्ते १०० ग्राम लेकर पानी में पीसकर ठंडाई सी बनाकर पिला दें। इससे अफीम का विष दूर हो जाता है।

नाफ हलना (नाभि हट जाना)-गोखरु की जड़ हाथ से उखाड़ कर नाभि पर बाँध लें। इससे नाभि अपने स्थान पर आ जाती है। लोहे का औजार प्रयोग न करें।

नामर्दी-सफेद मूसली २५० ग्राम का चूर्ण कर २ किलो गाय के दूध में खोया बनाकर २५० ग्राम घी में भून लें। ठण्डा होने पर १ किलो बूरा मिला लें। २०, २० ग्राम प्रातः सायं खायें। अत्यन्त पौष्टिक तथा शक्ति वर्धक हैं।

नारवा (वाला)-१. हींग १ ग्राम पानी के साथ पीसकर पीने से रोग जाता रहता है। १. २ सप्ताह प्रयोग करें।

२. पीपल के नर्म पत्ते गर्म करके बाधें।

नाल परिवर्तन-१. यदि किसी के लड़की ही लड़की उत्पन्न होती हो तो ढाक का एक कोमल पत्ता प्रतिदिन बछड़े वाली गाय के दूध के साथ पीसकर पिलायें गर्भ स्थापना के दूसरे मास के बाद ६ माह तक प्रयोग करें। निश्चय ही पुत्र उत्पन्न होगा और वह भी रुपवान, बलवान, बुद्धिमान।

२. शंख पुष्पी दुग्ध से सेवन करें लाभप्रद हैं।

नासूर-१. नीम की पत्तियों की पुल्टिस बनाकर बाधें।

२. सफेद चिरमिटी को पानी में पीसकर लगायें।

नींद न आना-१. नाखूनों में सरसों का तेल लगायें।

२. बकरी के दूध की तलवों में मालिश करें।

३. धनिया का तेल सिर में डालकर मालिश करें।

निमोनियां-अदरक, तुलसी के पत्तों का रस ५ ग्राम शहद के साथ मिलाकर ३ बार दिन में प्रयोग करें।

नेत्रों की खुजली-स्त्री के दूध में विषखपरा की जड़ घिस कर लगायें।

नेत्र ज्योति-१. गोरख मुन्ड़ी का अर्क २५ ग्राम प्रतिदिन पियें।

२. सोंफ ५०० ग्राम देशी खॉड समभाग मिलाकर पीसकर रख लें। रात्रि को १० ग्राम फांककर जल पियें।

३. सत्यानाशी कटेरी का दूध प्रातः सूर्योदय से पहले काजल की तरह आंख में लगायें।

४. नित्य प्रति आंखों में सरसों का तेल लगायें। सभी नेत्र रोगों में लाभप्रद है।

५. बछिया का पेशाब (गौ मूत्र) २ बूंद आंखों में डालें।

नेत्र पीड़ा-पीपल का दूध आंखों पर लगायें। पानी बहना, ढ़लकना काला, आंख का दुखना दूर होता है।

नक्तान्ध (रतोंधी)-प्याज का रस २ बूंद प्रातः सायं आंखों में डालें।

पड़वाल-१. पहले पड़बा लों को उखाड़ दें फिर बबूल (कीकर) की कलियों का दूध सलाई से आँखों में लगायें।

२. पड़वालों को उखाड़कर बारह सिंगा का सींग घिसकर लगायें।

पथरी-१. मूली का पानी २० ग्राम यवक्षार १ ग्राम दोनों को मिलाकर १५ दिन पिलायें।

२. सत्यानाशी डन्ठल गर्म करके पथरी वाले स्थान पर बाँधें।

३. हरी दूब को मिश्री मिलाकर घोट कर ठंडाई बनाकर पियें।

४. आक के फूल को गाय के दूध में पीसकर ३० दिन पिलें।

पागल कुत्ता काटे का उपचार-१. सत्यानाशी की जड़ दही में पीसकर घोल बनाकर पिला दें। इंजैक्शन लगवाने की आवश्यकता नहीं है।

२. ग्वार के पाठें के गूदे में थोड़ा सा सैधा नमक जहाँ कुत्ते ने काटा है वहाँ वांध दें २, ३ दिन में विष दूर हो जायेगा।

३. चूहे की मैगनी पीसकर भर दें।

पसली का दर्द-बारह सिंगा घिसकर काली मिर्च मिलाकर लैप करें।

वायु विकार-१. काली कूड़ा की छाल १० ग्राम गुड़ १५० ग्राम में मिलाकर गोली बना लें। २ गोली प्रति दिन खायें।

पथ्य-१. खटाई न खायें।

२. सम्हालू के बीज १० ग्राम पीसकर १०० ग्राम गुड़ में गोली बनाकर प्रयोग करें। २ गोली गुन गुने जल से खायें।

३. सोंठ, मिर्च काली, पीपल छोटी, हरड़, सहजने के बीज, लोंग सब समभाग लेकर कूट छानकर सहजने के रस में मटर जैसी गोली बना लें। सुखा कर शीशी में रख लें। २ गोली नित्य सेवन करें। ५४ प्रकार की वायु तथा ६२ प्रकार के शूलों को दूर करता है। (अनुभूत है)

वगल गन्ध-चूना पानी में पीसकर लगायें।

वायु गोला-पुर्ननवा (सांठ की जड़) २ अंगुल जड़ ५० ग्राम घी में पीस गर्म कर १ ग्राम मीठा सोड़ा डालकर गर्म-गर्म पिलायें।

बच्चों के दस्त-सूखा वेल का गूदा, आम की गुठली, हींग का फूला काला नमक समभाग लेकर चूर्ण बना कर माता के दूध के साथ चटायें।

वाजी कर योग-असगन्ध नागौरी २० ग्राम शतावर, उड़द की दाल चामकश, गोंद कतीरा, लाजवन्ती, ईसव गोल दाना सब सम भाग कूट पीस छान कर रख लें।

कोंच के बीच शुद्ध किये हुए ५० ग्राम, ताल मखाना, गोखुरू विदारी कन्द, तीनों वस्तुऐं २०-२० ग्राम, सालम पंजा ५० ग्राम मिश्री २०० ग्राम सबको कूट छान पहली वाली दवा में मिला गौ दुग्ध से ५ ग्राम लें।

बहरापन-लोंग, लहसन, काली मिर्च तिल के तेल में गर्मकर २-२ बूंद ड्रापर से कानों में डालें।

बालों को उड़ाना-बालों को उखाड़ कर वहाँ पर शूहर का दूध लगा देने से बाल फिर नहीं उगते।

२. कुसुम्वा के तेल की मालिश करने से बाल थोड़ी देर में उड़ जाते हैं।

शंख भस्म ५० ग्राम, हरताल वर्किय १० ग्राम दोनों को पीसकर पानी में बालों पर लेप करें।

(क्रमशः)

ऋग्वेद में सृष्टि उत्पत्ति एवं विस्तार:

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

यह अब एक सर्व स्वीकृत विषय है कि ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ है! प्राचीनतम ग्रन्थ होने के साथ ही यह ज्ञान विज्ञान का भण्डार भी है। इसमें विज्ञान सम्बन्धी कुछ ऐसे मंत्र भी हैं जिनकी विज्ञान में अभी खोज नहीं हो सकी है। ऋग्वेद में ऐसे यानों का वर्णन भी है जो जल, थल एवं आकाश में समान रूप से चल सकते हैं। ऋग्वेद में सृष्टि की उत्पत्ति, रचना एवं विस्तार के विषय में भी विस्तृत वर्णन हुआ है जो वर्तमान विज्ञान के अनुकूल भी है।

किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावा पृथिवी निष्टतक्षु:।

ऋ. 10.81.4.

प्रश्न यह है कि वह कौन सा वन है तथा वह कौन सा वृक्ष है जिससे परमात्मा प्रेरित जगत् की रचना में लगी शक्तियां द्यु और पृथ्वी लोक का निर्माण करती है? इस प्रश्न का उत्तर देने के पूर्व सृष्टि उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ धारणाओं पर हम विचार करना अधिक पसन्द करेंगे।

स्वामी शंकराचार्य के अनुसार यदि सृष्टि को मिथ्या माना जावे तो मानवीय चेतनता की तत्व मीमांसीय समस्या के अतिरिक्त हमारे लिए अन्य कोई समस्या ही नहीं रहेगी। वास्तव में उनकी इस मान्यता का कारण उनका सृष्टि को उसके कारण रूप में खोजने का प्रयत्न था। उनकी खोज का अन्तिम परिणाम यह था कि ब्रह्म और केवल ब्रह्म ही शाश्वत सत्य है परन्तु व्यावहारिक रूप में वे जगत् की सत्ता को स्वीकार करते थे।

दूसरा विचार यह है कि पदार्थ एवं ऊर्जा के मेल से बना यह संसार शून्य से उत्पन्न हुआ है इतना वाहियात है कि विचार करने के योग्य भी नहीं है। गीता में स्पष्ट कहा गया है-'नासतो विद्यते भावोनाभावो विद्यते सत'।

सृष्टि की उत्पत्ति पर तीसरा विचार यह है कि सृष्टि सदैव से है और सदैव ही बनी रहेगी। अरिस्टोटल तथा अन्य अधिकांश यूनानी लोग सृष्टि के प्रारम्भ होने की विचारधारा का विरोध करते थे। उनके अनुसार यह तो ईश्वर की सत्ता का खुला अपमान था। जैन धर्म भी सृष्टि की उत्पत्ति को स्वीकार नहीं करता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती का विचार इससे भिन्न है। वे सत्यार्थ प्रकाश के बारहवें समुल्लास में लिखते हैं-'जो संयोग से उत्पन्न होता है वह अनादि और अनन्त कभी नहीं हो सकता है। सभी संयुक्त पदार्थ उत्पत्ति और विनाश वाले देखे जाते हैं फिर यह जगत् उत्पत्ति और विनाश वाला क्यों नहीं होगा ?

'वर्तमान भौतिक विज्ञान भी इसका समर्थन करता है। ज्योति विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान् नोब्लॉक का कहना है कि ज्योति विज्ञान यह बताता है कि विश्व का श्रीगणेश सुदूर अतीत में है और भौतिकी यह भविष्यवाणी करती है कि अन्त में इसका अन्त भी होगा। अब हम पहले वैज्ञानिक विचारों पर ही विचार करते हैं। डा. क्वीसलैण्ड कोथरान लिखते है-'रसायन शास्त्र यह रहस्योद्घाटन करता है कि द्रव्य का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है कुछ प्रकार के द्रव्यों का तेजी से और कुछ का धीरे-धीरे इसलिए द्रव्य का अस्तित्व शाश्वत नहीं है। इसका अर्थ हुआ कि उसका अन्त है तो कभी न कभी उसका आदि भी होने चाहिए।'

डॉ. एडवर्ड लूथर कैसर लिखते है-'उष्मा गति का दूसरा नियम जिसे एन्ट्रोपी कहते हैं सृष्टि के सदैव से रहने की बात को गलत सिद्ध कर देता है। एन्ट्रोपी के नियम के अनुसार अपेक्षाकृत गरम पिण्डों से ताप ठंडे पिण्डों की तरफ लगातार प्रवाहित होता रहता है तथा प्रवाह को उलट कर स्वत: विरूद्ध दिशा में प्रवाहित नहीं किया जा सकता है। ताप का यह प्रवाह उस समय तक चलता रहता है जब तक कि दोनों पिण्डों का ताप एक न हो जाय। उस स्थिति में कोई उपयोगी ऊर्जा शेष नहीं रह जावेगी। फिर कोई भी भौतिक या रासायनिक परिवर्तन संभव नहीं होगा। परन्तु चूंकि अभी वह समय नहीं आया है, इसका अर्थ है कि सृष्टि सदैव से नहीं है। इस प्रकार विज्ञान यह सिद्ध कर रहा है कि हमारी इस सृष्टि का प्रारम्भ है और ऐसा करने में परमात्मा की सत्ता को भी सिद्ध कर रहा है क्योंकि जिसका भी आदि है वह स्वयं प्रारम्भ नहीं हुआ है उसका कोई न कोई प्रारम्भ करने वाला है।

सन् 1929 ई. में् एडविन हुब्बल ने एक महत्वपूर्ण खोज की कि आप कहीं से भी देखें तो आप देखेंगे कि दूर की निहारिकाएं हमसे दूर हटती जा रही है और जो निहारिका हमारे से जितना अधिक दूर है उतनी ही अधिक तेज़ी से हमसे दूर हटती जा रही है। दूसरे शब्दों में सृष्टि फैल रही है। इसका अर्थ यह भी है कि प्रारम्भिक काल में ये चीजें कम दूरी पर रही होगी। फिर उसने V=HR नियमखोजा। V= आकाश गंगा के खिसकने की गति, R= आकाश गंगा की दूरी H=Hubble Constant Hubble ने बताया कि जिसे Big Bang कहते हैं तब सृष्टि अत्यन्त ही सूक्ष्म तथा अनन्त घनत्व भी थी। ऐसी स्थिति में विज्ञान के सभी नियम और भविष्यवाणी करने की योग्यता भी टूट जावेगी। यदि Big Bang से पूर्व कोई घटना घटी है तो वह वर्तमानकाल में क्या हो रहा है इस पर प्रभाव नहीं डालेगी। स्टीफेन डबल्यू हाकिङ्ग प्रलयावस्था में भी समय का होना मानता है।

वर्तमान विज्ञान में सृष्टि उत्पत्ति Big Bang से ही मानी गई है। इस मत का प्रारम्भ अल्फर-बैथ-गेमो द्वारा हुआ है। उनके अनुसार यह विश्व ताप की सघनता और तापमान की उच्च अवस्था से विस्फोट होने के कारण बना है। यह विश्व मूलभूत अत्यन्त संपीडित तारों एवं आकाश गंगाओं की निकटवर्ती अत्यन्त गरम गैसों से तथा पृष्ठ भूमि में विद्यमान सामग्री से बना है। इस सिद्धान्त में यह माना जाता है कि जो भारी तत्व हैं वे अपेक्षाकृत हलके तत्वों के क्रमिक चरणों में हुए मेल से बने हैं। एक विशेष समय थी कि जब ये आकाश गंगायें बनी थी। गुरूत्वाकर्षण शक्तियां आकाश गंगाओं के निर्माण में कारण भूत थी। डाक्टर डोनाल्ड हेनरी पोस्टर प्रोफेसर मेरियन विश्व विद्यालय लिखते हैं-'यदि मैं यह सिद्धान्त मान लूं कि यह सृष्टि अत्यन्त संपीडित अत्यन्त तापयुक्त स्थिति से प्रारम्भ हुई है तो मूल कण के कर्ता के रूप में और उस ऊर्जा के स्रोत के रूप में परमात्मा को भी स्थान देना होगा जिसने यह दबाव और ताप पैदा किया।

एक दूसरा मत गोल्डी-बौण्डी-होइल का है जिसे निरन्तर सृजन का सिद्धान्त कहते हैं। यह सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित है कि सृष्टि देश और काल दोनों में समरूपता तो है किन्तु गति शून्य नहीं है। इस सिद्धान्त के निर्माता इस बात पर सहमत है कि विश्व फैल रहा है एवं आकाश गंगायें बाहर की ओर खिसक रही है। इन आकाश गंगाओं के बिखरते जाने की क्षतिपूर्ति के लिए और विश्व की शक्ल सूरत को ज्यों की त्यों बनाए रखने के लिए वे यह मानते हैं कि द्रव्य का लगातार सृजन हो रहा है और उनसे नये तारा पुंज बन रहे हैं ताकि दूखीक्षण की दृष्टि सीमा के बाहर और परे सरकती हुई आकाश गंगाओं के रिक्त स्थान की पूर्ति हो सके।

अब हम ऋग्वेद के आधार पर सृष्टि उत्पत्ति विषय पर विचार करते हैं। सृष्टि सदा से नहीं है, इसकी रचना हुई है इस विषय पर ऋग्वेद स्पष्ट रूप से वर्णन करता है-

त्रिरस्मैसप्त धेनवो दुदुहे सत्यामाशिरं पूर्व्ये व्योमनि।

चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रेयदृतैर वर्धत।।

ऋ. 9.70.1

भावार्थ-परमात्मा ने प्रकृति रूपी उपादान कारण से इस सृष्टि की रचना की है और वह इस प्रकार कि प्रकृति से महतत्व, महतत्व से अहंकार, अहंकार से पञ्च सूक्ष्म तन्मात्रायें, सूक्ष्म तन्मात्राओं से पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, पांच स्थूल तन्मात्रायें आकाश, वायु, तेज, जल, और पृथ्वी!

यहाँ महत्व को गिनती में इसलिए नहीं लिया गया है कि क्योंकि वैदिक विद्वानों की दृष्टि में तो वह प्रकृति ही माना गया है। अहंकार से लेकर पृथ्वी तक शतत्वों की यहाँ गणना हुई है।

सांख्यदर्शन में इनकी गणना इस प्रकार की गई है-प्रकृति, (सत्, रज, तम कणों की साम्यावस्था) महतत्व, अहंकार, पांचसूक्ष्म तन्मात्रायें (शब्द, स्पर्श, तेज, रस और गन्ध) पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, मन, पांचस्थूल तन्मात्रायें आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी तथा पुरूष, इस प्रकार कुल पच्चीस तत्व। विज्ञान में Big Bang से पूर्व स्थिति पर विचार नहीं किया गया है परन्तु ऋग्वेद में सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व प्रलयावस्था पर भी गहन विचार किया गया है।

गीर्णं भुवनं तमसापगूडहमावि: स्वर भवजाते अग्नौ।

तस्य देवा: पृथिवी द्यौरूतापोऽरणयन्त्रोषधी: सख्ये-अस्य।। ऋ. 10.88.2.

सृष्टि के पूर्व प्रलयकाल में समस्त जगत् अपने कारण में निगला गया हुआ प्रलयान्धकार अथवा प्रकृति से ढका रहता है। ताप के प्रकट होने पर वह प्रादुर्भूत होता है। इस ताप के सहकार्य से इन्द्र आदि देव, पृथ्वी, द्युलोक, जल अन्तरिक्ष तथा ओषधियां आदि उत्पन्न होते हैं। **(क्रमश:)**

पृष्ठ 2 का शेष-महाभारत में व्रत-चिन्तन

दान देने और दान लेने वाले मनुष्य में क्या विशेषता है? इसके उत्तर में पितामह कहते हैं-'जो ब्राह्मण साधु (सदाचारी) और असाधु (दुराचारी) पुरूष से दान लेता है, उनमें सद्गुणी पुरूष से दान लेना अल्प दोष है किन्तु दुराचारी से दान लेने वाला पाप में डूब जाता है। युधिष्ठिर ने गृहस्थ-धर्म के बारे में पूछा तो पृथिवीदेवी द्वारा श्रीकृष्ण जी को दिए गए उत्तर को उद्धृत करते हुए पितामह कहते हैं-'गृहस्थ को सदा ही देवताओं, पितरों, ऋषियों और अतिथियों का पूजन एवं सत्कार करना चाहिए... प्रतिदिन यज्ञ के द्वारा देवताओं का, अतिथि-सत्कार के द्वारा मनुष्यों का (श्रद्धापूर्वक सेवा द्वारा पितरों-माता, पिता आदि का) तथा वेदों का नित्य स्वाध्याय करके पूजनीय ऋषि-महर्षियों का यथाविधि पूजन और सत्कार करना चाहिए। इसके पश्चात् भोजन करना उचित है। प्रतिदिन भोजन से पूर्व अग्निहोत्र और बलिवैश्वदेव यज्ञ करे। माता-पिता की प्रसन्नता और तृप्ति के लिए प्रतिदिन अन्न और जल आदि द्वारा उनकी सेवा करे। भोजन तैयार होने पर उसमें से अन्न लेकर विधिपूर्वक बलिवैश्वदेव यज्ञ करना चाहिए। गृहस्थ को सदा यज्ञशेष का ही भोजन करना चाहिए। कुत्तों, चाण्डालों और पक्षियों के लिए भूमि पर अन्न रख देना चाहिए। यह बलिवैश्वदेव नामक यज्ञ है। इसका प्रातः और सायंकाल अनुष्ठान् किया जाता है। नरेश्वर! इस गृहस्थ-धर्म का पालन करते रहने पर तुम इस लोक में सुयश और मरने पर स्वर्ग अर्थात् सुख विशेष को प्राप्त कर लोगे।'

महाभारत में एक अत्यन्त सुन्दर प्रसंग आता है (अनुशासन पर्व) जहां मैत्रेयी के आतिथ्य से प्रसन्न होकर महर्षि व्यास जी कहते हैं-

त्रीण्येव तु पदान्याहुः पुरूषस्योत्तमं व्रतम्।
न द्रुह्येच्चैव दद्याच्च सत्यं चैव परं वदेत्।।

वेद मनुष्यों के लिए तीन बातों को उत्तम व्रत बताते हैं-किसी के प्रति द्रोह अर्थात् वैर-भाव न रखना, दान देना और सत्य वचन बोलना।

वेद, मनुस्मृति, उपनिषद्, महाभारत तथा योगदर्शन के अनुसार संकल्प एवं दृढ़-निश्चयादि का नाम व्रत है। वेद में जिन व्रतों का अनुष्ठान् करने के लिए कहा गया है उनमें प्रमुख हैं-हम ब्रह्मचर्यव्रत का धारण करें, काम-क्रोध-लोभ-ईर्ष्या से उपराम होने का व्रत लें, प्राण-साधना, तपस्वी जीवन, कर्मशीलता, यज्ञ करना, ज्ञानवान् बनना, सत्यवादी बनना, दान देना, शारीरिक निरोगता, मस्तिष्क की परिकृष्ठता, हृदय की विशालता तथा उपासना का संकल्प लें।

ऋग्, यजु व साम को, भूः, भुवः व स्वः को, ईश्वर, जीव व प्रकृति को तथा प्राण, अपान व व्यान को जानें आदि। योगदर्शन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच यमों को महाव्रत कहा गया है। मनु महाराज जी ने जिन व्रतों की चर्चा की है वे मुख्यतः इस प्रकार हैं-श्रेष्ठ विधि से ही आजीविका चलाना, सुख, आयु, यश, धन की पवित्रता, इन्द्रिय-निग्रह, स्वाध्याय, पांच-यज्ञ, अच्छी संगती, ब्रह्ममुहूर्त में उठकर सन्ध्योपासना, यम-नियमों का अनुपालन, पर्व के दिनों में रजस्वला स्त्री से गमन न करना, परस्त्री से गमन न करना, मन में आत्महीनता के भाव न आने देना, सत्य व प्रियभाषण, सदाचार, माता-पिता-आचार्य व ब्राह्मण की हिंसा नहीं, वेद निन्दा नहीं, नास्तिकता के भाव नहीं, सत्य-धर्म का पालन, धर्म-वर्जित अर्थ व काम का त्याग, दान-वृत्ति तथा आत्मचिन्तन आदि। उपनिषद् में कीर्तिवान्, अग्निमय जीवन, परस्त्री व पुरूष से व्यभिचार नहीं, तपोमय जीवन, वर्षा की निन्दा न करने, ऋतुओं की निन्दा न करने, जनता की निन्दा न करने, पशु निन्दा न करने, मांस न खाने, ब्राह्मणों की निन्दा न करने तथा आत्मा को ऊँचा रखने, मेधा-बुद्धि, शारीरिक सबलता, मधुर-वाणी, यज्ञादि, ऋत्, सत्य, तप, दम व शम, यश, स्वाध्याय, प्रवचन, कीर्ति, पवित्रता, अन्न, धन्न, बुद्धि, धर्माचरण, माता-पिता-आचार्य-अतिथि को देव मानना, श्रद्धा से दानादि देना, धर्माचार आदि में सन्देह होने पर किसी उच्चकोटि के ब्राह्मण को प्रमाण मानना। महाभारत में अनेक व्रतों का अनुष्ठान् करने के लिए कहा गया है तथा उनसे मिलने वाले उत्तम फलों का भी विवेचन किया है। महाभारत में वर्णित कुछ मुख्य व्रत इस प्रकार हैं-वेद स्वाध्याय, इन्द्रिय-संयम, दान, दम, विद्या, यज्ञ, बलिवैश्वदेव-यज्ञ, माता-पिता-आचार्य-पितर-वृद्ध, बड़े भाई, गुरू व अतिथि की सेवा करना, विनयशीलता, ब्रह्मचर्य और मांस न खाना आदि।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान दिवस मनाया गया जिसमें मुख्य यजमान श्री अंकित गोयल एवं श्रीमती रितिका गोयल जी ने पवित्र पावन वेद मंत्रों से यज्ञवेदी पर बैठ कर आहुतियां प्रदान की गई। आचार्य देवराज जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। आर्य समाज की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने स्वामी श्रद्धानंद अमर बलिदान तेरे तो जमाना सदके भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिये स्वामी श्रद्धानंद जी की परपौत्री पारूल बधवा जी ने अपने विचार प्रकट करते हुये स्वामी श्रद्धानंद जी के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम व सामाजिक उत्थान के लिये किये गये अभूतपूर्व योगदान पर चर्चा की। उन्होंने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन के कुछ संस्मरणों का उदाहरण देते हुये उनके ओजस्वी व्यक्तित्व के बारे में बताया कि कैसे करोड़ों में कोई एक महापुरुष होते हैं जो अपना सब कुछ देश और समाज के लिये बलिदान करने का साहस रखते हैं। उन महापुरुषों में एक महान पुरुष स्वामी श्रद्धानंद जी थे। आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने स्वामी श्रद्धानंद जी के बारे में बताया कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी को आज के दिन 23 दिसम्बर को उनके घर पर एक श्रद्धालु की तरह मिलने आए अब्दुल रशीद ने गोली मार कर हत्या कर दी थी। शहीद हो गये स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश को अंग्रेजों की दास्तां से आजादी दिलाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। इसके अलावा दलितों को उनका अधिकार दिलाने और पश्चिमी शिक्षा की जगह वैदिक शिक्षा प्रणाली का प्रबन्ध करने जैसे अनेक महत्वपूर्ण काम किये। स्वामी श्रद्धानंद जी के उपकार कभी भुलाये नहीं जा सकते। उन्होंने अपना सब कुछ देश और समाज के लिये समर्पित कर दिया और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना हरिद्वार में की। गांधी जी को महात्मा का दर्जा भी स्वामी श्रद्धानंद जी ने दिया। श्री अश्विनी डोगरा जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद ने श्रद्धा से सीने पर कई गोलियां खाकर अपना तन,मन और धन लुटा दिया। ऐसे महापुरुष को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। इस अवसर पर हर्ष लखनपाल, चौधरी हरिचंद, विजय कुमार चावला, राजेश वधवा, सुनीता भाटिया, डिम्पल भाटिया, सुरेन्द्र अरोडा, ललित मोहन कालिया, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, अनु आर्य, दिव्या आर्य, अमन आर्य, सुदर्शन आर्य, उर्मिल भगत, सुभाष मेहता, ओम प्रकाश मेहता, अशोक धीर, उर्मिल शर्मा, अमित शर्मा, लवलीन कुमार, ओम मल्होत्रा, कुबेर शर्मा, राज सेठ, हितेश स्याल, रानी अरोड़ा, नीरज जस्सल, राजेश कुमार, गीतिका अरोडा, राजीव कुन्दरा, संदीप अरोड़ा, नवीन चावला, ज्योति शर्मा, अर्चना मिश्रा, अनिल मिश्रा, राजीव शर्मा, रोहित शर्मा उपस्थित थे।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज मन्दिर, फिरोजपुर छावनी में 23-12-18 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

सर्वप्रथम पंडित मनमोहन शास्त्री जी ने इस उपलक्ष्य में यज्ञ करवाया, जिसमें स्थानीय नगर के बड़े ही प्रतिष्ठित ऐडवोकेट श्री अजय चावला उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रेनु चावला व सुपुत्री डॉ. अमीषा चावला मुख्य यज्ञमान बने।

इसके उपरान्त इस समाज के सुयोग्य प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर अपने अमूल्य विचार व गीत रखे और कहा कि स्वामी दयानन्द जी के कार्यों को उन्होंने आगे बढ़ाते हुए अपने सारे जीवन को और परिवार को न्यौछावर कर दिया और आर्य होने का आदर्श स्थापित किया। उनकी आत्मकथा ''कल्याण मार्ग का पथिक'' को पढ़कर जीवन में हताश-निराश इन्सान भी उठ कर ऊंचा उठ सकता है।

श्री कुलदीप वर्मा, श्री कर्ण आनन्द, श्री जोशी, श्री विपन कुमार मित्तल, रेलवे अधिकारी श्री वी.के. चड्ढा वरिष्ट मण्डल यान्त्रिक अभियन्ता की गरिमामयी उपस्थिति रही। अन्त में जलपान का आयोजन श्री राजेश आहूजा व उनके सुपौत्र रियांश ने सम्भाला।

शान्ति पाठ के उपरान्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मनोज आर्य महामन्त्री

आर्य समाज मंदिर बस्ती टैंकावाली फिरोजपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज मंदिर, बस्ती टैंकावाली फिरोजपुर में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम पं. मनमोहन शास्त्री जी ने यज्ञ करवाया जिसमें मुख्य यजमान इस समाज के संरक्षक श्री अरविन्द शर्मा जी को बनाया जिनकी प्रेरणा से उत्सव में सभी ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। पंडित मनमोहन शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन की प्रेरणादायक बातें बता कर सभी को बड़ा सुन्दर उपदेश दिया और कहा कि यदि हम किसी कार्य को करने का संकल्प कर लें तो वह पूरा होता है जिसका सबसे बड़ा उदाहरण स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करना है। सारे कार्यक्रम का प्रबन्ध कोषाध्यक्ष श्री अनिल वत्स व श्रीमती कुसुम वत्स ने संभाला। आगामी सभी कार्यक्रमों को सुचारू रूप से चलाने का सभी ने व्रत लिया। आर्य समाज के प्रधान डा. रजनीश प्रताप लूथरा ने पधारे हुये सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। जलपान के आयोजन के उपरान्त कार्यक्रम का समापन किया गया।

सुरेन्द्र कुमार शर्मा
मंत्री आर्य समाज

सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने 100 परिवारों को कम्बल वितरित किये

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में गरीब परिवारों को कम्बल वितरित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्रीमती गुलशन शर्मा जी एवं आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के प्रधान श्री रणजीत आर्य जी। जबकि चित्र दो में गरीब बच्चों को खाद्य सामग्री बांटी गईं।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में चल रहे सायंकालीन शिक्षा केन्द्र जिसमें एन.आई.टी. छात्रों द्वारा बच्चों को निशुल्क शिक्षा दी जाती हैं, में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी तथा श्रीमती गुलशन शर्मा जी ने झुग्गी झोंपड़ियों में रहने वाले बच्चों व उनके परिवारों को गर्म कम्बल वितरित किये। बच्चों को खाने पीने की सामग्री भी आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के सहयोग से दी गई। इस समय शिक्षा केन्द्र में 200 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने कहा कि ऐसे बच्चों को सायंकाल में ट्यूशन वर्क की तरह पढ़ाया जाता है। बच्चों को बढ़िया से बढ़िया शिक्षा देने के लिये आर्य समाज अपने स्तर पर प्रयास कर रहा है। गरीब बच्चों के परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है जिस कारण आर्य समाज द्वारा ऐसे बच्चों की मदद की जा रही है। श्री सुदर्शन शर्मा जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने शिक्षा के ऊपर विशेष बल दिया। इस समय भारत में सरकार के पश्चात शिक्षा के क्षेत्र में दूसरा स्थान आर्य समाज एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं का है। आर्य समाज ने न केवल स्कूल, कॉलेज ही खोले, अपितु गुरूकुलों की स्थापना कर प्राचीन शिक्षा पद्धति को भी नवजीवन प्रदान किया। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने एकांगी कार्य नहीं किया। आर्य समाज ने नारी शिक्षा की ओर भी न केवल ध्यान ही दिया अपितु उसे प्राथमिकता प्रदान की। इसी के परिणामस्वरूप आज शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की अग्रणी भूमिका है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर बहुत ही नेक कार्य कर रहा है और सारी टीम की भरपूर प्रशंसा की। यहां पर मैडिकल कैम्प, योगा कैम्प तथा दैनिक सत्संग यज्ञ का आयोजन भी किया जाता है। श्री रणजीत आर्य प्रधान आर्य समाज ने कहा कि आर्य समाज ऐसे मानवता की सेवा के कार्य आगे भी करता रहेगा। इस अवसर पर स्त्री आर्य समाज की कार्यकारी प्रधान अनु आर्य, प्रवीण शर्मा, सुरेन्द्र अरोडा, विजय चावला, अश्विनी डोगरा, चौधरी हरिचंद, ललित मोहन कालिया, के.एल. ठाकुर, उर्मिल शर्मा, प्रिया मिश्रा, हंसराज, केदारनाथ शर्मा, ओम प्रकाश मेहता, कुबेर शर्मा व नंदिनी शर्मा भी मौजूद थीं।

–रणजीत आर्य प्रधान आर्य समाज

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस व वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल नवांशहर में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस एवं वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुये। आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी एवं दोआबा आर्य सी.सै.स्कूल के प्रिंसीपल राजिन्द्र गिल ने उन्हें सम्मानित किया। चित्र दो में बच्चों को पारितोषिक देते हुये एवं चित्र तीन में उपस्थित अभिभावक एवं आर्य जन।

दोआबा आर्य सी. सै. स्कूल में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस तथा विद्यालय के वार्षिक पारितोषिक समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आर्य समाज नवांशहर के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी की अध्यक्षता में हुआ जिसमें आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी ने मुख्य अतिथि के पद को सुशोभित किया। दोआबा आर्य सी. सै. स्कूल के प्रिंसिपल श्री राजिन्द्र गिल जी ने सभी मेहमानों का स्वागत किया। सभी गणमान्य अतिथियों ने दीप जलाकर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। दोआबा आर्य सी. सै. स्कूल के बच्चों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किये। डी. ए. एन. कॉलेज फॉर वूमैन की प्रो. करूणा ओबराय ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा बताये गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। आर्य समाज के पुरोहित श्री अमित शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द को महान् क्रान्तिकारी बताया। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरूकुल कांगडी की स्थापना करने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था और राष्ट्र को नई दिशा प्रदान की थी। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री विनोद भारद्वाज जी ने अपना अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए कहा कि हमें अपने महापुरूषों के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणादायक है। गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना करके स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी संस्कृति और सभ्यता को बचाया है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने हिन्दुओं और मुसलमानों की एकता पर जोर दिया। वे अंग्रेजों की बांटों और राज करो की नीति को समाप्त करना चाहते थे। इसलिए मुस्लिमों में उनके प्रति सम्मान की भावना थी। जामा मस्जिद की प्राचीर से वेद मन्त्र का उच्चारण करते हुए भाषण की शुरूआत करने वाले पहले गैर मुस्लिम व्यक्ति थे। परन्तु जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देखा कि कांग्रेस भी अंग्रेजों के नक्शे कदम पर चलते हुए मुस्लिम तुष्टिकरण में लगी हुई है तो उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर राजनैतिक गतिविधियों को समाप्त कर दिया और शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ किया और खुले रूप से भारतीयकरण का कार्य अपने हाथ में लिया। उनके द्वारा प्रारम्भ किए गए शुद्धि आन्दोलन से नाराज होकर एक मतान्ध मुसलमान ने स्वामी श्रद्धानन्द की गोली मारकर हत्या कर दी। हम सभी को स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वारा मार्ग पर चलते हुए आर्य समाज की उन्नति के लिये कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर स्कूल के बच्चों को पुरस्कार बांटे गये। स्कूल की प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री जिया लाल जी ने सभी आये हुए गणमान्य महानुभावों का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम में आर्य समाज के सभी सदस्यों एवं अन्य महानुभावों ने भाग लिया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

अरविन्द नारद प्रचार मन्त्री
आर्य समाज नवांशहर

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।